Warning: इस ग़ल्ती फहमी में न पड़े कि हम को मेहनत व सई के बग़ैर यह दुआ़यें पढ़ने से ग़ैबी ख़ज़ाने मिल जायेंगे। बल्कि सई व मेहनत भी जारी रखें। और यह दुआ़यें भी पढ़ें। इन्शाअल्लाह ! अल्लाह तआ़ला उन की मुफ्लिसी ज़रुर दूर फरमायेगा।

नोटः इस किताब के तमाम अम्लियात की इजाज़त है मगर सिर्फ शराब पीने वालों और सटटा खलने वालों और जुवाड़ी ज़िनाकारी अय्याशी करने वालों को इस किताब के किसी भी अ़मल की इज़ाज़त नहीं है। और जमाअ़ते अहले हदीस व देवबन्दी वहाबी को भी इजाज़त नहीं।

(1) जनाब शैख अब्दुल वहीद (नायब सदर)जामा मस्जिद दमुआ मरहूमीन– दादा शैख नब्बू दादी नूर बी नाना शैख ख़ैराती बहन हमीदा बी व सईदा बी व खान्दान के जुम्ला मरहूमीन

(2) मुअज़्ज़िन मुहम्मद इक़बाल साहब।जामा मस्जिद दमुआबराए ईसालः–सवाब हाजी शेख नवाब मुहम्मद यूनुस मुहम्माद यूसुफ

(3) अब्दुश्शरीफ उर्फ बब्लू मोमिन पूरा दमुआ : बराए ईसाले सवाब, मर्हूम अब्दुल क़य्यूम,मर्हूमा शकीला बी,मर्हूमा खातून बी।

(4) हाफिज़ वसीम साहब। बराए ईसालेःसवाब ।मर्हूम अब्दुल बशीर इब्न मरहूम अब्दुल जब्बार लाला दमुआ

(5) मुहम्मद अनीस भाई,बड़कोई वाले । बराए ईसाले सवाब : जुम्ला मोमिनीन मोनिनात।

(6) अब्दुल मजीद राईन दमुआ (7) ज़फर भाई उर्फ मुन्नू साहब

(8)फिरोज़ हन्फी घोड़ा वाड़ी (9) मास्टर मुहम्मद अनीस डुंगरया नत्बर 4

मिन्जानिब : 1ः नवजवानाने अहले सुन्नत दमुआ 2ः अन्जुमन कमेटी दमुआ 3ः जमाअ़ते अहले सुन्नत दमुआ 4ः रज़ा हिन्दी इस्लामिक लाइब्रेरी दमुआ,5ः ग़ुलामाने हुज़ूर ताजुश्शरीअ़ह दमुआ नोट : इस किताब को इस लिए फराख़्त की जा रही है इस की आमदनी से दूसरी किताबें निकाली जायेगी।

अहले इस्लाम के मानने वालों के दिलों में तहलका मचाने वाली मुस्तनद रुहानी किताब

अन्मोल ख़ज़ाने व रुहानी वज़ाइफ

मालदार बनाने का आज़मूदा राज़, ज़िन्दगी भर और रमज़ानुल मुबारक में बरकत वाली थैली का ख़ास अ़मल और दिगर वज़ाइफ इस किताब में बहुत कुछ,बुज़रुगाने दीन से मन्सूब अम्लियात

तर्तीब व तालीफ

मौलाना हकीम क़ारी

मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान क़ादरी जमदा शाही

ज़िला बस्ती यू पी 272002

खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ

ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश) 480555

कोई भी अ़मल समझ में न आए तो सम्पर्क करें।

मोबाइल नम्बरः 7415066579

हदिया मात्र सिर्फ
Rs.10 Rupees
TEN.RUPEES

Email ID- khanjamdashahi@gmail.com
www.jamdashahi.blogspot.com

(1)''अ फ हसिबतुम और अज़ान के करिश्मात''

1.जादू जिन्नात के सरकश,बद असरात,2.घरेलू,खान्दानी उलझनों,3. मुसलसल नाकामियों 4.सुलगते मसअलों 5.सुलगती ख़्वाहिशों 6.तड़पते अरमानों 7.ज़मीन बोस होती आरज़ुओं 8.खान्दानी झगड़ों 9.लाइजाज बीमारियों 10.कारोबार में ज़वाल 11.औलाद के नाफरमानियों 12.शरीके हयात व औलाद की बे राह रवी 13. नज़र बद के बद असरात 14. परेशान कुन हालात, और रोज़गार की मुश्किलात, में निहायत मुफीद,इन्तेहाई,और बहुत सों की आज़मूदा है।

''अ फ हसिबतुम और अज़ान के करिश्मात''

1.कुरआन व हदीस और उलमाए किराम व सूफियाए इज़ाम से मन्कूल अ फ हसिबतुम और अज़ान के फज़ायल व फवायद ।

2. मौजूदा दौर में इस अ़मल के करिश्माती फवायद। 3.ख़ान्दानी और घरेलू उलझनों से छुटकारा पाने।

4.जादू जिन्नात के मुकम्मल तोड़,और मुकम्मल बीख़ कुनी। 5. कैन्सर,बल्ड कैन्सर,बोन मीर व कैन्सर,चेस्ट कैन्सर,ब्रेन हम्ब्रेज,दिल,जिगर और गुर्दे के जान लेवा बीमारियां,डाइलासाइज़,डेंगी की वबा,पोलियों की मअ़ज़ोरी,पैदाईशी मअ़ज़ोरी गर्दन और कमर के मोहरों के दर्द,पूरे या आधे सर का दर्द,घुटनों के दर्द समेत तमाम जिस्मानी तकालीफ से करिश्माती शिफा। 6. तमाम नफ्सियाती और ज़हनी एमराज़,टेन्शन,इस्टरेस,एंगज़ाईटी,डेप्रेशन,पागलपन,याददाश्त की कमी,तख़य्युलाती और वहमी रोग,कन्नोतियत का त़ारी होना। 7.ख़राब इलेक्टरानिक्स और मैक्नीकल आलात का ठीक हो जाना । 8. तअ़लीम और हिफाज़त के लिए मज़बूत ह़िसार,तेज़ रफ्तार,ज़ोद असर,पूरी दुनिया में कहीं पर भी मुअस्सिर अ़मल

के करिश्मात व मुशाहिदायत और रुहानी तज्रेबात।।

''अ फ हसिबतुम और अज़ान वाला अ़मल का मुकम्मल का तरीक़ा

तरीक़ए अ़मल : मुकम्मल अज़ान और सूरह मोमिनून की आख़िरी चार आयात,दोनों अ़मल मरीज़ के दोनों कानों में अव्वल व आखिर तीन तीन दफा दरुद शरीफ के साथ सुबह व शाम सात सात बार पढ़ कर दम करें और अगर मरीज़ खुद करे तो पहले अपने दायें कान का तसव्वुर कर के दायें कन्धे पर दम कर ले और फिर बायें कान का तसव्वुर कर के बायें कन्धे पर दम करें।।

इन्तेहाई सख़्त परेशानी और मजबूरी की सूरत में यही अ़मल हर घन्टा बअ़द करें।

सूरह मोमिनून की आयत 115 से 118 पारह अठठारह सात मर्तबा अ फ हसिबतुम अन्नमा ख़लक़नाकुम अ़ ब संc व अन्नकुम इलैना ला तुर जउन,फ त आ़लल्लाहुल मलिकुल हक़्कु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अ़र्शिल करीम,वमनय्यंदउ़ मअ़ल्लाहि इलाहन आ ख र ला बुरहा न लहू बिही फइन्नमा हिसाबुहू इन् द रब्बिही इन्नहू ला युफ्लिहुल काफिरुन,वक़ुर्रब्बिग़्फिर व अन् त ख़ैरुर्राहिमीन (सूरह रहमान आयत 115 ता 118 पारह 18 रुकूअ़)

अज़ान मक़्द्दस सात मर्तबा 7 मर्तबा

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ।
अशहदुअल्लाइला ह इल्लल्लाह —अशहदुअल्लाइला ह इल्लल्लाह ।
अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह — अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह
। ह़य्‌ य अ़लस्सलाह़ —ह़य्‌ य अ़लस्सलाह ।
ह़य्‌ य फलाह़ ह़य्‌ य फलाह़ । अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर। लाइला ह इल्लल्लाह ।

मुझे ज़रुर पढ़ें !!!!!!!!!!

''अ फ हसिबतुम और अज़ान के करिश्मात'' की आ़म इज़ाज़त है।

आप इस अ़मल को आगे भी किसी दूसरे को बता सकते हैं। मगर खुदारा ! इसे अपना ज़रियअ़ए मआ़श न बनायें.मक़्सद सिर्फ ख़ल्के खुदा की खिदमत हो।

सूरे मोमिनून (पारह 18) की आख़िरी चार आयत सात मर्तबा और अज़ान सात मर्तबा अव्वल आखिर तीन तीन दफा दरुद शरीफ के साथ पढ़ कर पहले दायें और फिर बायें कान का तसव्वुर कर के दायें और बायें कन्धे पर दम करें । अगर मरीज़ के साथ और दिगर अह़बाब भी दम करना चाहें तो वह भी दम करें बल्कि ज़रुर करें। यह अ़मल हर घन्टे के बाद करें,हर नमाज़ के बाद भी कर सकते हैं,और रोज़ाना सुबह व शाम भी कर सकते हैं। वजू बे वजू कर सकते हैं,सारे घर के अफराद मिल कर रोज़ाना करें तो फायदा ज़्यादा होगा। ख़्वातीन : अय्याम की सूरत में अफहसिबतुम का अ़मल न करें और अज़ान का अ़मल कर सकती हैं।अपने कन्धे पर दम करें।

नोटः एक होता है अज़ान का कहना बवक़्ते फर्ज़ नमाज़,जिसे बाक़ायदा क़िब्ला हो रुख़ हो कर,कानों में उंग्लियां डाल कर और बाआवाज़ बुलन्द पढ़ना पड़ता है। और इस कि पर्चे में बयान किए गए अज़ान को बतौर वज़ीफा पढ़ना है। जिस के लिए क़िब्ला रुख हो कर,कानों में उंग्लियां डाल कर और बाआवाज़ बुलन्द पढ़ना ज़रुरी नहीं। इसी तरह बतौर वज़ीफा अज़ान को मर्द,औ़रत,बूढ़ा,बच्चा हर कोई पढ़ सकता है। उमर और जिन्स की कोई क़ैद नहीं।

दूसरा ख़ज़ाना

माल दार बनाने का आज़मूदा राज़– ज़िन्दगी भर और रमज़ानुल मुबारक में बरकत वाली थैली का खास अ़मल

तस्मिया•बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम•को कहते है। रमज़ान से पहले सफेद कपड़े की थैली बनवालें

रमज़ानुल मुबारक का मख़सूस अ़मल (बरकत वाली थैली)

1.सुबह व शाम 129 मर्तबा सूरह कौसर मअ़ तस्मिया अव्वल आखिर दरुद शरीफ 7 बार

2रम्ज़ान की.चांद रात को 313 दफा सूरह कौसर मअ़ तस्मिया अव्वल आखिर दरुद शरीफ 7 बार ,रात के किसी भी हिस्से में।

3.दस्वां रोज़ा ग्यारहवीं की रात 313 बार सूरह कौसर मअ़ तस्मिया अव्वल आखिर दरुद शरीफ 7 बार, रात किसी भी हिस्से में।

4. बीसवां रोज़ा इक्कीस रमज़ान की रात भी 313 बार सूरह कौसर मअ़ तस्मिया अव्वल आखिर दरुद शरीफ 7 बार रात के किसी भी हिस्से में। 5.सत्ताइस्वीं शब 11 ग्यारह 11 ग्यारह बार अव्वल आख़िर दरुद शरीफ और 1100 बार सूरह कौसर ।

6.ईद वाले दिन ईद की नमाज़ से फारिग़ होने के बाद 313 दफा सूरह कौसर मअ़ तस्मिया अव्वल व आखिर दरुद शरीफ 7,7 बार

नोटः अगर यह अ़मल किसी मजबूरी के पेशे नज़र रात में न हो सके तो दिन में भी कर सकते हैं। सिवाए 27 वीं शब के अ़मल के कि वह सिर्फ रात ही को करना है। 1100 मर्तबा सारे घर के अफराद इन्फेरादी (अकेले)तौर पर भी पढ़ सकते हैं या चन्द अफ़राद मिल कर भी पढ़ लें और बरकत वाली थैली पर दम कर लें और दुआ कर के फिर सो जायें. फिर उठें तहज्जुद पढ़ें और सहरी करें. ख़्वातीन (औ़रतें) अय्याम के दिनों में यह अ़मल न करें बल्कि बअ़द में उस की क़ज़ा कर लें। दरुद शरीफ जो भी आसानी से याद हो पढ़ सकते हैं।

ज़िन्दगी भर के लिए सूरह कौसर का बा बरकत अ़मल

रोज़गार की मुश्किलात और घर में ख़ैर व बरकत के लिए निहायत ही पुर तासीर अ़मल जिस की तअ़रीफ अल्फाज़ नहीं मुशाहेदा है।

तरीक़ए अ़मल : कपड़े की एक अ़दद थैली जो बा आसानी से जेब में आ सके उस पर सुबह व शाम 129 बार सूरह कौसर मअ़ तस्मिया और अव्वल आखिर दरुद शरीफ पढ़ कर दम करें।

उस के इलावह दिन में जितनी दफा भी थैली में नोट डालें या निकालें एक दफा सूरह कौसर पढ़ कर दम कर लिया करें यह आ़म मअ़मूल ज़िन्दगी का अ़मल है जिस से लाखों लोगों को फायदा हुआ और हो रहा है। आप ख़ुद भी यह निहायत ही आसान अ़मल ज़िन्दगी में लायें और सदक़ए जारिया और बरकत को आ़म करने की निय्यत से दोस्तों को मुताआरिफ करायें और खुदा पाक की ग़ैबी मदद का नज़्ज़ारा अपनी आंखों से देखें।

ख़ैर व बरकत और रुहानी फैज़ के लिए आज़मूदा कुरआनी वजाइफ (नुस्खा)

अल्लाहुम्‍ म रब्बना अन्ज़िल अ़लैना माइ द तम्मिनस्समा इ तकूनु लना ईदल्लिअव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्मिन क वरज़ुक़्ना व अन त ख़ैरुर्राज़िक़ीन (सूरए मायदा आयत 114)

इस दुआ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक ग़ैबी रिज़्क़ अ़ता फरमाता है। जहां कहीं से रिज़्क़ का कोई वसीला नज़र न आ रहा हो इन्सान मायूसी और ना उम्मीदी की अथाह गहराइ में घिरे शख़्स पर से परेशानी दूर हो जाती है,इस का दस्तर ख़्वान निहायत वसीअ़ हो जाता है,अल्लाह के फज़्लो करम से नस्लों के लिए रिज़्क़ और बरकत का सामान हो जाता है,रमज़ान शरीफ में अफतारी के वक़्त पढ़ना

रिज़्क़ के दरवाज़े खोलवा देता है।

त़रीक़ए अ़मलः अव्वल आखिर त़ाक़ बार दरुद शरीफ 3,5,7, मर्तबा पढ़ कर ग्यारह मर्तबा यह क़ुरआनी दुआ पढ़ कर आस्मान की तरफ मुंह कर के फूंक मारें और अल्लाह पाक से दिल ही दिल में दुआ़ मांग लें,तमाम ज़िन्दगी भर इस अ़मल का मअ़मूल रखें,दिन में कई बार भी कर सकते हैं,रमज़ान में अफतारी से पहले करें।

फायदा मुझ पर अ़मल करने से होगा

इस किताब में ज़िकर कर्दा मुबारक ग़ैबी वज़ीफ़ा से दुनिया ने फ़ायदा उठाया और उठा रही है। अगर आप किसी भी रुहानी अ़मल से भर पूर फवायद हासिल करना चाहते हैं तो इन दस बातों पर अ़मल कीजिए और खुदा की ग़ैबी क़ुदरत के नज़्ज़ारे अपनी आंखों से देखिए । इन्शाअल्लाह

1. यक़ीन के साथ अ़मल करें,शक अ़मल को ज़ाये कर देता है। 2. तवज्जोह के साथ अ़मल करें,बे तवज्जेही से पढ़ी जाने वाली दुआ़यें हवा में गुम हो जाती हैं। 3.रिज़्क़े ह़लाल का एहतेमाम करें,ह़राम ग़िज़ा अ़मल के असर को ख़तम कर देती है। 4. हर अ़मल अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए करें,मालिक व मौला राज़ी होगा,तो काम बनेगा ।। 5.फराइज़ का एहतेमाम करें,जो लोग नमाज़ और दिगर फराएज़ अदा नहीं करते उन के अअ़माल बे असर रहते हैं। 6. ह़राम कामों से बचें,वह काम जिन्हें शरीअ़त ने ह़राम क़रार दिया है उन का इरतेकाब रुहानियत को नुक़्सान पहोंचाता है,तब अ़मल कारगर नहीं होता है। 7. अल्फाज़ की सहीह का एहतेमाम करें,अल्फाज़ ग़लत पढ़ने से मअ़ना बदल जाते हैं। 8.त़हारत का एहतेमाम करें,खुद भी पाक साफ हों,लिबास और जगह भी पाक साफ रखें। 9.आ़जिज़ी और आहो ज़ारी के साथ अ़मल करें। 10.झूठ,धोखा बाज़ी,ग़ीबत,ह़सद,चुग़ली,यह बातें रुहानी अअमाल के फायदे में बहुत बड़ी रुकावट बन जाती हैं।

बरकत वाला अ़मल

क़ारईनः इस अ़मल को फैलायें,मैं ने यह जान बूझ कर रम्ज़ानुल मुबारक से पहले यह मज़मून दिया है सिर्फ इस लिए कि आप रमज़ान से पहले बरकत वाली थैली की तय्यारी रखें और इस के अ़मल को अभी शुरु कर दें और जो रम्ज़ान का खास अ़मल है रमज़ान शरीफ से यह अ़मल शुरु करना है घर का हर फर्द पढ़े।

,जितने अफराद पढ़ सकते हैं और बरकत वाली थैली पर दम करें,घर का हर फर्द अपनी थैली रख सकता है,या घर में एक थैली रखें उस में सब लोग दम करें।

औलियाए किराम और बरकत वाली थैली

गुज़िश्ता दौर के सहाबा व अहले बैत रिज़्वानुल्लाह अ़लैहिम अजमईन , औलियाए किराम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन की ज़िन्दगी में बरकत की वजह जहां नेक अअ़माल थे वहां बरकत वाली थैली भी उन के साथ थी। खुसूसी दम की हुई बरकत वाली थैली मुफ्लिस'' ग़रीब'' नादार' तंगदस्त और क़र्ज़ों में डूबे हुओं के लिए एक अनमोल तोहफा और ख़ज़ाना है। आप तमाम रक़म थोड़ी हो या ज़्यादा उसी में रखें और निकालते और डालते वक़्त तस्मिया के साथ एक बार सूरह कौसर पढ़ लें कभी बरकत ख़तम नहीं होगी। इन्शाअल्लाह । मर्द अपने साथ रख सकते हैं। औ़रतें अपने परस में रख सकती हैं,घर में भी रख सकते हैं। रोज़ाना 129 दफा सुबह व शाम सूरए कौसर मअ़ तस्मिया उसी थैली पर दम कर दें,यह अ़मल दिन में एक बार भी कर सकते हैं। लेकिन अगर दो बार करें तो नफा ज़्यादा होगा । जितना गुड़ उतना मीठा। अगर तमाम उमर का मअ़मूल बना लें तो फिर कमाल देखें। वज़ू बे वज़ू हर हालत में कर सकते हैं लेकिन बा वज़ू बरकत ज़्यादा होगी बरकत वाली थैली अगर मैली हो जाए तो आप उस को धो भी सकते हैं।

नोटः हज़रत हकीम साहब की तरफ से इस अ़मल की तमाम ख़्वातीन और मर्द हज़रात को मुकम्मल इजाज़त है और यह भी इजाज़त है कि आप दूसरे लोगों को भी इस अ़मल की इजाज़त दे सकते हैं।

कोई भी अ़मल समझ में न आए तो सम्पर्क करें। 7415066579 9993494374

तीसरा ख़ज़ाना

(3) 1:सूरह फातेहा 2:आयतल कुर्सी –अज़ीम तक सूरह बक़रह आयत 255 पारह नम्बर 3

3:आयत –शहिदल्लाहु–सूरह आले इमरान आयत नम्बर 18,19 पारह नम्बर तीन 4:क़ुलिल्लाहुम्म म मालिकल मुलिक–आले इमरान आयत नम्बर 26,27 पारह 3 5:लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम–सूरह तौबा आयत नम्बर 128,129 पारह 11 6: अल्लाहुम्म म अन् त रब्बी –सिरातिम्मुसतक़ीम । दुआए अबू दर्दा

चौथा ख़ज़ाना

(4)या लतीफम्बिख़ल्क़िही या अ़लीमम्बिख़ल्क़िही या ख़बीरम्बिख़ल्क़िही उल्तुफ बी या लतीफु या अ़लीमु या ख़बीरु

इस वज़ीफे को भी अपनी ज़िन्दगी का मअ़मूल बनायें। इन्शाअल्लाह हर परेशानी में काम आयेगी। नमाज़ी बे नमाज़ी चल्ते फिरते पढ़ा करें।

पांचवां ख़ज़ाना इम्दादे ग़ौसे अअ़ज़म

(5)इम्दाद कुन इम्दाद कुन । अज़ बन्दे ग़म आज़ाद कुन ।।

दर दीनु व दुनिया शाद कुन । या ग़ौसे अअ़ज़म दस्तगीर।।

तर्जमाः मदद फरमायें,मदद फरमायें ग़म की क़ैद से आज़ाद करें। दीन व दुनिया में खुशी अ़ता करें,ऐ ग़ौसे अअ़ज़म मदद फरमाने वाले।

इस वज़ीफा को विर्दे ज़बान रखें कि (इन्शाअल्लाह) वलियों के सुल्तान हुज़ूर ग़ौसे अअ़ज़म रदियल्लाहु तआला अ़न्हु दस्तगीरी फरमायेंगे और देखते ही देखते ग़म व अलम,दुख व परेशानी,हर बीमारी ज़रुर ज़रुर ज़रुर दूर होगी। यह वज़ीफा निहायत ही मुजर्रब (आज़माया हुआ)है।

छटवां खज़ाना

(6) ला हौ ल वला क़ुव्व व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम . अ़वाम का यह ख़्याल है कि यह कलमा शैतान को भगाने के लिए पढ़ा जाता है। और अगर किसी को लाहौल पढ़ते सुनता है,तो वह फौरन लड़ने के लिए तय्यार हो जाता है कि क्या कोई मैं शैतान हूं। यह उन की जहालत है। हालां कि शैतान को भगाने के लिए

अ़उ़जिबिल्लाह पढ़ी जाती है न कि लाहौल। बल्कि ला हौ ल वला क़ुव्व व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम भी सुब्हानल्लाह और अल्हम्दुलिल्लाह की तरह एक कलमा है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हमा वक़्त (हमेशा) इस के पढ़ने का हुक्म दिया है। अबू मूसा अशअ़री रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साथ साथ चल रहा था। आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि क्या मैं तुझे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना बताउं । मैं ने अर्ज़ किया,जी हां,आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ला हौल पढ़ा कर यह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है। एक और हदीस में है। जो निसाई ने मआ़ज़ बिन जबल से रिवायत की है। आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ला हौ ल वला क़ुला क़ुव्व त पढ़ा करो जन्नत के दरवाज़ों मे से एक दरवाज़ा है। एक और हदीस में है जो इमाम अहमद ने अपनी मस्नद में हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी से रिवात की है आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ला हौल वला क़ुव्व त पढ़ा कर यह जन्नत का एक दरख़्त है। एक और हदीस में है।अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को नसीहत फरमाई और उन्हें लाहौ ल वला क़ुव्व व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम पढ़ने का हुक्म फरमाया और साथ साथ यह भी इरशाद फरमाया कि यह 99 बीमारियों की दवा है जिन में सब से मअ़मूली बीमारी ग़म है। तो यह कलमा दुनिया की बीमारियों और दीनी दोनों के लिए मुफीद है। दुनिया में तो मुसीबतें दूर होने का सबब है और आखिरत में जन्नत में दाख़ले का सबब है। फक़ीर का मशवरा है। कि हर रोज़ सौ 100 बार यअ़नी एक तस्बीह पढ़ी जाए बुज़रुगों का मअ़मूल(आ़दत) में था।

कोई भी अ़मल समझ में न आए तो सम्पर्क करें। 7415066579 9993494374

(7) तंग दस्ती और ग़ुर्बत का इलाज

मवाहिबे लदुन्निया में रेवायत है। कि एक शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और यह अ़र्ज किया कि दुनिया मेरी तरफ से पीठ फेर कर चली गई है। हुज़ूर ने फरमाया कि मलाइका की तस्बीह पढ़ा करो।अ़र्ज किया कि हुज़ूर मलाइका की तस्बीह किया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने सुबह सादिक़ के बाद सूरज निकलने से पहले ''सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम'' सौ मर्तबा और इस्तग़फार सौ मर्तबा । यह सुन कर वह शख़्स चला गया और चन्द रोज़ के बाद आया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम खुदा ने मुझे इतना दिया कि मेरें घर में रखने को जगह नहीं। नोट : एक तस्बीह रोज़ पढ़ें सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम और एक तस्बीह इस्तग़फार रोज़ पढ़ें।अस्तग़्फिरुल्ला ह रब्बि मिन कुल्लि ज़म्बिं व उतूबु इलैह

(8) फातिहा सिलसिला ग़ौसिया क़ादिरिया

दरुदे ग़ौसिया सात बार अल्हम्दो शरीफ एक बार आयतल कुर्सी एक बार क़ुल हुअल्लाह शरीफ सात बार फिर दरुदे ग़ौसिया तीन बार पढ़ कर उस का सवाब इन तमाम मशाइख़े किराम की अरवाहे तय्यबा की नज़्र करें जिस के हाथ पर बैअ़त की है। अगर वह ज़िन्दा है तो उस के लिए दुआ़ए आफियत व सलामत करें वरना उस का नाम भी शामिले फातिहा कर लें दरुदे ग़ौसिया यह है

(9)अल्लाहम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदना व मौलाना मुहम्मदिम्मअ़दनिल जूदि वल करमी व आलिही वबारिक वसल्लिम

(10)पन्ज गन्ज क़ादरीः— सुबह बाद नमाज़े फजर, या अ़ज़ीज़ु या अल्लाह । बाद नमाज़े ज़ुहर, या करीमु या अल्लाह। असर बाद या जब्बारु या अल्लाह । बादे नमाज़े मग्रिब, या सत्तारु या अल्लाह । इशा बाद या ग़फ्फारु या अल्लाह ।यह सब वज़ीफे 100 बार अव्वल आख़िर तीन बार दरुद शरीफ।(11)और पांच वज़ीफेः—बादे नमाज़े मग़्रिब और बादे नमाज़े फजर दस बार(1) रब्बि इन्नी मग़लूबन फनतसिर (2) दस बारः— रब्बि इन्नी मस्सनियद्दुर्रु व अन त अरहमुर्राहिमीन

(3) दस बार :—सयहज़मुल जमउ़ व युवल्लूनद्दुबुर (4) दस बार :—अल्लाहुम्म म इन्ना नजअ़लु क फी नुहूरिहिम व नऊ़ज़ुबि क मिन शुरुरिहिम (5) दस बार :—हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कलतु व हु अ रब्बुल अर्शिल अज़ीम

अव्वल व आख़िर तीन बार दरुद शरीफ फजर बाद और मग्रिब बाद इस की मदावमत से सब काम बनेंगे और दुशमन मग़लूब रहेंगे।

(12)क़ज़ाए हाजात व हुसूले ज़फर व मग़लूबिए दुशमनान

(1)अल्लाहु रब्बी ला शरी क लह 874 बार अव्वल व आख़िर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ इस क़दर अ़ददे मुअय्यन के साथ बा वज़ू क़िब्ला रु दो ज़ानू बैठ कर रोज़ाना ता हुसूले मुराद पढ़ें और इसी कलिमा को उठते बैठते, चलते फिरते,वज़ू बे वज़ू हर हाल में बे गिन्ती बे शुमार ज़बान से जारी रखें

(13)हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील, 450 बार रोज़ाना ता हुसूले मुराद, अव्वल व आख़िर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ, जिस वक़्त घबराहट हो इसी कलिमा की बे शुमार तक्सीर करें।

(14)बादे नमाज़े इशा एक सौ ग्यारह बार''तुफैल हज़रत दस्तगीर दुशमन हो वे ज़ेर'' अव्वल व आख़िर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ ता हुसूले मुराद, यह तीनों अ़मल अमूर मज़कूर के लिए निहायत मजर्रब व सहलुल हुसल हैं उन से ग़फ्लमत न की जाए।

जब कोई हाजत पेश आए हर एक अपने अपने अअ़दाद के मुताबिक़ वक़्ते मुतअ़य्यिन पर पढ़ा जाए पहले और दूसरे के लिए कोई वक़्त मुअय्यन नहीं, जिस वक़्त चाहें पढ़ें और तीसरे का वक़्त बादे नमाज़े इशा है ।

(15) एक अहम दुआ आप के लिए

कोढ़ी, अन्धा, लंगड़े, कैन्सर, एडस,आदि रोगी या परेशान को देखे तो यह दुआ़ पढ़ ले तो इन्शाअल्लाह उस रोग और मुसीबत से बचा रहेगा।

दुआ़ यह हैः—अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी आ़फानी मिम्मब तला क बिही व

फद द ल नी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क़ तफ्दीला 0
नोट– यह दुआ़ ज़ुकाम बुख़ार व आंख का आना और खुजली के रोगों को देख कर न पढ़ें, क्योंकि इन बीमारियों से बदन का सुधार होता है और इन बीमारियों के आने की वजह से बहुत सारी बीमारियां दूर हो जाती है।
इस दुआ़ को रोज़ाना कम अज़ कम तीन बार पढ़ें सुबह शाम , अव्वल आख़िर दरुद शरीफ ,और किसी भी मुसीबत ज़दह को देख कर पढ़ें (नोटः–मुसीबत ज़दह के सामने धीरे से पढ़ें)

सोलहवां अ़मल

(16) एक और दुआ़ः–बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यदुर्रु म अ़ इस्मिही शैउन फिल अर्दि वला फिस्समा इ व हुवस्समीउल अ़लीम
इस दुआ़ को रोज़ाना कम अज़ कम तीन बार पढ़ें सुबह शाम , अव्वल आख़िर तीन बार दरुद शरीफ।

सत्तरहवां अ़मल

(17)रुहानी तोहफा : रमज़ानुल मुबारक का अ़मल । रिज़्क़ के वास्ते।
यह फक़ीर आप के लिए रमज़ान की बा बरकत साअ़तों में मुजर्रब शुदा नुस्ख़ा बराए फरावानी रिज़्क़ पेश करने की सआ़दत हासिल कर रहा हूं।
बताना मेरा काम है अ़मल आप का काम और फज़्ल करना खुदा और उस के प्यारे महबूब आक़ाए नाम्दार सय्यदुल मुर्सलीन ख़ातिमुल अम्बिया रहमतुल्लिआ़लमीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का काम है।
27 रमज़ानुल मुबारक को लैलतुल क़द्र की बा बरकत रात में 14 दाने सफेद जौ के ले लें । हर दाने पर 72 मर्तबा या रज़्ज़ाक़ु अव्वल वआ़ आख़िर 11 बार दरुद शरीफ पढ़ कर दम करें और अपने परस या बटवे में रख लें राज़िक़े दो जहां साल भर के लिए ख़ज़ानए ग़ैब से रिज़्क़ अ़ता करेगा । अगले साल फिर नया अ़मल करें । नमाज़ की पाबन्दी और कसरते दरुद शरीफ,इस्तग़फार लाज़िम है। इस फक़ीर के हक़ में भी दुआए ख़ैर करें। यह अ़मल मुख़्तसर है रमज़ान में ज़रुर करें। कुछ और बेहतरीन अ़मल करें खुद भी फायदा उठायें और लोगों को फायदा पहोंचायें।

(18) मन्त्र यह है। आयतल कुर्सी कुल पीरों की सवारी,आह मारे पुकारी,तांबे का कोट, लोहे की कड़ी,सुलेमान पैग़म्बर की दुआ़।
नोट : इस अ़मल की ज़कात देनी पड़ेगी,इस की ज़कात आप को 27 रजब की रात और पन्दरहवीं शअ़बान और रमज़ान की सत्ताईस्वीं शब को 313 बार पढ़ कर ज़कात देनी है फिर आप इस मन्तर के आ़मिल हो जायेंगे। इस मन्तर से आप हर बीमारी,हर परेशानी,आसेब और करतब के लिए है। सिर्फ पढ़ कर फूंकना है। और कुछ उपर लगा हुआ है। तो 11 बार पढ़ कर अपने हाथ पर दम करें। और चांटा मारें। नोटः ज़कात हर साल देनी है।
(19) काला ख़ैरा काला विस,जिस को कांटे सांप,उस का उतरे वीस,न उतरे तो शैख आए,उस की मुंगरी,अन नरविस नरविस नरविस।
नोट : इस अ़मल की भी ज़कात आप को 27 रजब की रात और पन्दरहवीं शअ़बान और रमज़ान की सत्ताईस्वीं शब को 313 बार पढ़ कर ज़कात देनी है फिर आप इस मन्तर के आ़मिल हो जायेंगे।
इस मन्तर से आप सिर्फ सांप का ज़हर उतार सकते हैं । और सांप के ज़हर उतारने का त़रीक़ा है कि नीम की बारह सीकें ले लो नीम की सीकों से सर से पांव तक (पैर तक) झाड़ते जाओ और यह मन्तर पढ़ते जाओ। और झाड़ते जाओ। इन्शाअल्लाह ज़हर उतर जाएगा।
(20) मन्त्र यह हैः यहां था तो कहां गया,गाय के दम में गाय को लगा पान,उतर उतर बिच्छू तेरे सात खोरी की क़सम।
नोट : इस अ़मल की भी ज़कात आप को 27 रजब की रात और पन्दरहवीं शअ़बान और रमज़ान की सत्ताईस्वीं शब को 313 बार पढ़ कर ज़कात देनी है फिर आप इस मन्तर के आ़मिल हो जायेंगे।
बिच्छू का ज़हर उतारने के लिए। जहां बिच्छू ने डंक मारा है। वहां पर नमक ले कर लगा कर झाड़ो और पढ़ते जाओ।
खुशखबरी : यह तीनों अ़मल कोईै भी किसी भी मज़्हब (धर्म) का अ़मल कर सकता है। बस ज़कात बड़ी रातों में देना है। 18 नम्बर वाला अ़मल सब के लिए मुफीद है। ज़रुर करें।

(21) मन्तर यह है: (लोबान धार बन धार,बांध लोहा अगन सार,ताब तजारी,किया कराया,भेजा भेजाया बांधू दम दम ज़िन्दा शाह मदार)
नोट : इस अ़मल की ज़कात आप को सूरज गर्हण या चांद गर्हण को 108 बार पढ़ कर देना है। मजबूरी की सूरत में 27 रजब की रात और पन्दरहवीं शअ़बान और रमज़ान की सत्ताईस्वीं शब को 108 बार पढ़ कर ज़कात दिया जा सकता है। फिर आप इस मन्तर के आ़मिल हो जायेंगे।

नोटः किसी को आसेब या करतब जिन्नात या चुड़ेल भूत परेत किया कराया कुछ भी हो तो उस को एक बाटल पानी में 21 बार पढ़ कर दम कर के और पिलायें और 21 बार उस के उपर दम भी करें और किसी ने जादू किया है।
और किसी ने जादू किया है। तो करने वाले पर पलट जायेगा । और अगर किसी ने टोना टोटका किया है तो जो किया है उसी पर पलट जायेगा। इस अ़मल को रोज़ाना सात बार पढ़ना है ताकि तासीर बाक़ी रहे।

(22)मन्तर यह है' आयत कर्सी विच कुरान,आगे पीछे तू रहमान,मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की दुहाई,जादू टोना टोटका बांध,नज़र बद असर बद,भूत परेत बांध,जिन्न चुड़ेल को बांध योगनी डेरा सब बला को बांध बहक़्क़ो या बुददूहुन मदद मुझे बड़े पीर की ,शब्द सांचा,तिन्द कांचा फिरो मन्तर ईशवर वाचा।
नोटः नोट : इस अ़मल की ज़कात आप को सूरज गर्हण या चांद गर्हण के` मौक़े पर 108 बार पढ़ कर देना है। मजबूरी की सूरत में 27 रजब की रात और पन्दरहवीं शअ़बान और रमज़ान की सत्ताईस्वीं शब को 108 बार पढ़ कर ज़कात दिया जा सकता है। फिर आप इस मन्तर के आ़मिल हो जायेंगे।
इस अ़मल का गन्डा बनाना है और कच्चा सूत (कच्चा धागा)मरीज़ के क़द के बराबर सात बार तह कर के सात गांठ लगायें और हर गांठ पर सात बार पढ़ कर दम करें और वह गन्डा मरीज़ को पहनायें ।। यह गन्डा आसेब भूत परेत,जिन्न,टोना,टोटका,और करतब सभी बीमारियों

के लिए है। 18 से 22 तक के अ़मल या वज़ीफे बुज़ुरगाने दीन से मन्सूब है। इन सब अ़मल को कोई भी कर सकता है। कोई खतरा नहीं ,कोई परहेज़ नहीं,इन सब अ़मल को करने के बाद कमाई का ज़रियह न बनायें। वर्ना बुज़ुरगाने दीन से फैज़ नहीं मिलेगा और अगर कोई खुशी से नज़राना अपनी मर्ज़ी से दे रहा है। तो आप ले सकते हैं। कोई भी अ़मल समझ में न आए तो सम्पर्क करें। 7415066579

नेक मशवरा : शौक़ीन हज़रात 1.2.3.18.19.20.21.22.नम्बर वाला अ़मल ज़रुर करें। अगर आप को अ़मल का शौक़ नहीं भी है। तो भी यह अ़मल 4.5.6.7.15.16.17.नम्बर वाला अ़मल ज़रुरी करें।
यह अ़मल 8.9.10.11.,नम्बर वाला नमाज़ी हज़रात करें।
बहुत सख़्त परेशानी के आ़लम में 12.13.14 वाला अ़मल ज़रुर करें ।
दुशमन सतारहे हों।तो 14 वाला अ़मल ज़रुर करें।

अस्बाबे ख़ैर व बरकत(नीचे दिए गए यह सब काम बरकत होने का सबब है ।

(1)मग़्रिब की अज़ान सुनते ही घर में रोशनी करें। (2) घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करना और बिलखुसूस सूरह क़ुल हुवल्लाह अहद पढ़ना। (3) मोमिन के वास्ते ग़ायबाना दुआ़ करना (4) सुबह सवेरे उठना (5) नमाज़ पंजगाना अव्वल वक़्त पर पढ़ना।(6) उमूमन बा वज़ू रहना।(7) मस्जिद में अज़ान से पहले जाना और नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ना। (8) हर नमाज़ के बअ़द तस्बीह़ पढ़ना। (9) अपने अ़जीज़ों और हमसायों के साथ एह्सान करना। (10) मोमिन की मदद करना (11) बहुत ज़्यादा इस्तग़फार करना।(12)खाने से पहले हाथ धोना और कुल्ली करना ।(13) हर वक़्त पाक साफ रहना(14) दाहने हाथ में फैरोज़ा,याक़ूत,या अ़क़ीक़ की अंगूठी पहनना। (15)हर रोज़ सुबह के वक़्त सूरह यासीन पढ़ना (16) हर रोज़ रात को सूर वाक़िआ़ पढ़ना (17)हमेशा सच बोलना(18) घर को पाक साफ रखना (19) खुदा का शुकर करना (20)फर्श पर दस्तर ख़्वान बिछा कर खाना खाना।